**EDITORIAL**

# Imbibe the Legacy of May Day

The May day is the worldwide day of action and solidarity of International working class. The historic day was commenced with the event of Haymarket Square, Chicago on 4th May of 1886. The peaceful meeting conducted by various sections of Trade Unions was brutally oppressed by the police and administration of the city. The assemblage was convened demanding 8 hours legal working hours in all industries and factories and condemning those oppressing the workers. Many rounds were fired, hundreds of the workers injured and some died.

Trails were held on 8 leaders and of them the four great Albert Parsons, August Spies, George Engel, Adolp Fisher were hanged on November 11th 1887 and the youngest 22 years old Louis Lingg made suicide in the jail itself. They all became the Chicago Martyrs of working Class. They faced their trail with all courage and conviction. They spoke vociferously against the exploitative capitalist society and focused their dream of bringing a just society without any kind of exploitation by man against man namely Socialism. Let us all salute those brave hearts that stood for the cause of right of workers and for a fair society.

The workers and socialists of various countries met at Paris in 1889 and decided to observe May Day on every first of May month as an international working class action day for fair treatment of workers in every country, place and industry. This has been the practice since May 1, 1890.

In our country India, Com. Singaravelar a great patriot and working class leader of Madras first observed May Day by giving call for Procession and public Meeting in 1923. The AITUC session held at Delhi during 1927 called upon the workers of India to observe May Day throughout the country. Initially and naturally enthusiastic workers participation observing may Day was found in big cities like Calcutta, Bombay, Nagpur and Chennai. Then it has engrossed every section of the working class and today almost all the Trade Unions of India and the world are observing May Day with all fanfare and as celebration.

The working class of India played an appreciable role in our freedom movement and especially the role of P&T workers was not the least one. The experience of working class in India has been one of fighting for the protective labour Laws since the British period like right to form Unions and right to have collective bargaining thro some bibartite or tripartite machinery and settlement of industrial disputes, social security measures etc. The ruling class and the capitalist offences have been trying to solve their economic crisis by burdening the working people at industry as well as in the village farmlands.

Even after 70 years of Independence, the rulers and the ruling capitalist class system failed to solve our Agrarian crisis and the nation is witnessing the death of farmers in lakhs. Our valuable youth crores in numbers are in the plight of unemployment or under employment. The organized working class in almost all the industries are facing closures, disinvestment, fill, retrenchment, job shedding etc. The unorganized workers and contract labourers in lakhs are continuously fighting for the Government fixed minimum wage and not even 50 % of the wage so fixed is given to them. There is no guarantee for any social security to them. The security of women folk is greatly disturbed and the country is not able to protect our thousands of sisters who have every right to move anywhere without any fear.

But concessions have been given in galore to the corporate houses and they are allowed to loot public wealth. The other serious concern of the working class today is the unity of people having faith in various religions, customs, creed and food habits. Unfortunately society is disturbed by the self appointed cultural police. Let us reassure the unity of 120 crore people by standing together by practicing highest democratic ethics and protecting each other for the right cause.

NFTE has a rich tradition of observing May day in almost all the branches by hoisting our flags and promising protection of our workers from the various onslaughts. Our comrades in various cities and towns have been participating the May Day rallies and Meetings with other Trade unions. We hope they will do the same this year also with great enthusiasm.

The tasks before BSNL workers are great in number. It is our foremost duty to protect our BSNL and its financial Viability, by fighting out the offences of other private operators in the name of competition and against the ills of Government move. Let us strive our best to safeguard our net work both towers and cables. Let us focus our attention to get fair wage revi-

sion, though the question of profitability is haunting. There are 40000 youngsters who yet to get any fair social security provision like pension. They are thousands of daily rated labours yet to get minimum wage and social security. Let us rededicate ourselves for the welfare of all workers in the BSNL.

WFTU one of our great International Centre of world Trade Union Movement has given the following May day message for this year. "Organise Struggle against imperialistic Barbarity, for the Contemporary Needs of the people and youth, For a world without exploitation and wars." Let us spread the message. **May Day Greetings to all.**

संपादकीय

# प्रासंगिक मई दिवस को आत्मसात करें

मई दिवस अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक समुदाय का विश्व स्तरीय एकजुटता एवं कार्यवाई का दिन है। इस ऐतिहासिक दिवस का आरम्भ शिकागो शहर के हे मार्केट स्क्वायर में 4 मई 1886 को हुआ। विभिन्न श्रमिक संगठनों द्वारा आयोजित शांतिपूर्ण सभा को स्थानीय प्रशासन एवं पुलिस द्वारा क्रूरता से दबाया गया। यह श्रमिक सम्मेलन सभी उद्योगों एवं कल – कारखानों में प्रतिदिन आठ घंटे की कार्यविधि सुनिश्चित करने तथा श्रमिकों का शोषण करने एवं दबा के रखने वालों के विरूद्ध एकजुट आवाज उठाने के लिए आहूत किया गया था। मजदूरों की सभा पर गोलियों की बौछार की गई, जिससे सैकड़ों श्रमिक घायल हुए तथा कुछ जान गंवा बैठे।

धन्नासेठों के इशारे पर प्रशासन के आठ मजदूर नेताओं के विरूद्ध मुकदमा चलाई और महान अल्बर्ट पसिन्स, अगस्ट स्पाइस, जार्ज इन्जेल, एवं एडोल्प फिशर को फांसी पर लटका दिया गया तथा बाइस वर्ष का सबसे कम उम्र का श्रमिक नेता लुईस लिंग ने क्रूर यातनाओं और प्रताड़ना से पीड़ित होकर जेल में ही आत्महत्या कर ली। ये सभी अन्तर्राष्ट्रीय श्रम समुदाय के बीच शिकगों के शहीद के रूप में प्रतिष्ठित हुए तथा अमरत्व को प्राप्त किया। उन्होंने हिम्मत और बहादुरी के साथ बर्बर प्रशासन का मुकाबला किया। उन्होंने शोषणकर्ताओं के विरूद्ध आवाज बुलन्द किया तथा एक ऐसे न्यायपूर्ण समाज व्यवस्था की स्थापना का सपना संजोया जिस समाज में आदमी द्वारा आदमी को शोषण सम्भव नहीं हो। समाजवाद की स्थापना की कल्पना को सकार करने की दिशा में इन शहीदों को सलाम करते हैं जिन्होंने श्रमिकों के अधिकार के लिए दृढ़ संकल्प के साथ खड़े हुए तथा एक स्वच्छ समाज की स्थापना की दिशा में चिंगारी प्रसारित की।

सन् 1889 में सम्पूर्ण जगत के समाजवाद समर्थक एवं श्रमिक समुदाय की संयुक्त सभा पेरिस में आहूत हुई जिसमें शिकागो के शहीदों के सपनों को साकार करते हुए प्रति वर्ष मई माह के पहली तारीख को अन्तर्राष्ट्रीय श्रमिक चेतना दिवस मनाने का निर्णय लिया गया तथा सभी देशों में हर जगह तथा हर उद्योग में श्रम दिवस के रूप में मनाने का संकल्प लिया गया। यह मई दिवस पहली गई 1890 से सम्पूर्ण विश्व में मनाई जाने लगी।

का. सिंगारावेलर जो एक महान देशभक्त एवं श्रमिक नेता थे, सर्वप्रथम हमारे मुल्क भारत में मई दिवस के उपलक्ष में जुलुस निकालने एवं जनसभा आयोजित करने का आह्वान किया जो पहली मई 1923 को शानदार तरीके से सम्पन्न हुआ।

सन् 1927 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन सेन्टर की सभा सम्पन्न हुई जिसमें समस्त भारतीय श्रमिकों को राष्ट्रीय पैमाने पर मई दिवस मनाने की घोषणा की। आरम्भ में यह महान दिवस कलकता, मुंबई, नागपुर एवं चेन्नई जैसे बड़े शहरों में मनाया गया। कालान्तर में यह सम्पूर्ण भार में फैलते हुए आज की स्थिति में यह दिवस उद्योगों के सभी इकाइयों, कारखानों, कार्यालयों खेत मजदूरों यहां तक कि विश्वविद्यालय के छात्रों द्वारा मनाया जा रहा है। आज श्रमिक समुदाय इसे समारोह के रूप में आयोजत कर रहे हैं।

भारतीय श्रमिक समुदाय ने स्वतंत्रता आंदोलन में एक अहम भूमिका का निर्वहन किया है – जिसमें डाक–तार कर्मियों की भूमिका का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

भारतीय श्रमिक समुदाय ब्रिटिश शासनकाल से ही श्रमिक अधिनियमों का संरक्षण करने, संघ बनाने के अधिकार एवं द्विपक्षीय समितियों के माध्यम से श्रमिकों के हित में सौदेबाजी के अधिकार एवं सामाजिक सुरक्षा के लिए संघर्ष करते रहे हैं। शासक वर्ग एवं पूंजीवादी समूह अपने आर्थिक कठिनाई से पार पाने के लिए कामगारों एवं ग्रामीण मजदूरों पर लगातार बोझ बढ़ाते हैं तथा नकारात्मक प्रहार करते हैं।

आजादी के सत्तर साल के बाद भी शासक एवं उनके धन्नासेठ खेतिहारों समाज की समस्या का समाधान नहीं कर पाये हैं और राष्ट्र इस बात का गवाह है कि लाखों मजदूर जान गंवा चुके हैं।

हमारे करोड़ों नौजवान बेरोजगारी अथवा अर्द्ध बेरोजगारी का देश झेल रहे हैं। सभी उद्योगों के संगठित,

श्रमिक तालाबंदी, विनिवेश, विदेशी पूंजीनिवेश, छंटनी, नौकरी जाने के भय से रोज रूबरू हो रहे हैं। लाखों की संख्या में नियोजित आकस्मिक मजदूर एवं ठेका मजदूर सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम मजदूरी पाने के लिए संघर्षरत हैं परन्तु उन्हें निर्धारित रकम का पचास प्रतिशत भी प्राप्त नहीं हो पा रहा है। महिलाओं की सुरक्षा की गारन्टी नहीं हैं जिससे इस देश में हजारों बहनें असुरक्षित हैं। परन्तु कार्पोरेट घरानों को अकूत छूट देते हुए लोक – धन के लूट की छूट दी जा रही है। आज मजदूर जमात की अहम भूमिका ऐसे लोगों को एकजूट करना है जाति समुदाय एवं विभिन्न प्रकार के भोजन के बंधकर चलने को तैयार हों। आइये हम 120 करोड़ लोगों को एक सूत्र में बांधकर लोकतंत्र के पवित्र आधार को चट्टानी मजबूती देने और एक दूसरे की सुरक्षा के लिए कटिबद्ध बनें।

एन.एफ.टी.ई. अपने गौरवशाली परम्परा के अनुरूप प्रतिवर्ष हर शाखाओं में अपने सदस्यों एवं आम कर्मचारियों/श्रमिकों की हित रक्षा एवं एक जुटता के वादा के साथ मई दिवस को अपने झंडा फहराते हैं। हम साथी देश के कई भागों में तथा महानगरों बड़े शहरों में विभिन्न श्रमिक संगठनों के साथ एकजुटता रखते हुए सामूहिक मई दिवस के आयोजन का प्रतिभागी बनते हैं। हमें आशा है इस वर्ष भी हमारी शाखाएं अति उत्साह एवं एकजुटता के साथ मई दिवस का आयोजन करेंगी।

बीएसएनएल कर्मचारियों के समक्ष ढेर सारी चुनौतियां है। हमें कम्पनी एवं इसकी आर्थिक जीवंतता को सुरक्षित करना है। हमें प्रतिस्पर्धा के नाम पर निजी आपरेटरों के प्रहार एवं सरकार के ऋणात्मक रवैये के विरूद्ध एकजुट होकर बीएसएनएल को मजबूती के साथ उन्नति की दिशा में अग्रसर करना है।

हमारे साथ चालीस हजार युवा साथी हैं जिनके पेंशन एवं अन्य समाजिक सुरक्षा की गारंटी करने की जिम्मेवारी का संकल्प भी मई दिवस के लिए प्रासंगिक है। हजारों दैनिक मजदूरों एवं ठेका मजदूरों की मुख्य श्रमिक धारा में जोड़कर उन्हें उचित मजदूरी एवं सेवा की गारंटी करानी है। हमें फिर से बीएसएनएल के हर कर्मी के लिए कुर्बानी देने की जरूरत है। वर्ल्ड फेडरेशन ऑफ ट्रेड यूनियन जो श्रम समुदाय की विश्व स्तरीय संगठन है ने इस मई दिवस के लिए संदेश दिया है :– शोषण विहीन, युद्ध विहीन विश्व की संरचना हेतु, समाज्यवाद समर्थकों के विरूद्ध एवं युवा वर्ग सहित जनता की तत्कालिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एकजुटता के साथ संघर्ष आयोजित करो।

आईये हम डब्ल्यू एफ.टी.यू. के संदेश को हर कामगारों तक पहुंचाये।

सभी मेहनतकश समुदाय, न्यायप्रिय लोकतांत्रिक व्यवस्था में विश्वास रखने वाले समाजवादी विचरकों सहित सभी को मई दिवस की लाख–लाख शुभकामनाएं।